(2) अंश और न्यास स्वर

आधुनिक युग के अनुरूप अध्ययनकाल में गायकी में स्वतन्त्रता नहीं थी, उन्हें राग के एक निश्चित स्वर से ही गायन प्रारम्भ करना पड़ता था और निश्चित स्वर पर आकर समाप्त करना पड़ता था। निश्चित प्रारम्भिक स्वर को ग्रह या अंश स्वर तथा निश्चित समाप्ति स्वर को न्यास स्वर कहा जाता था।

आधुनिक समय में न्यास स्वर का प्रयोग प्राचीन अर्थ में नहीं होता है, गाते बजाते समय किसी स्वर पर अपनी इच्छा अनुरूप रुकने को न्यास करना कहते हैं, जैसे राग भीमपलासी गाते समय षड्ज (सा) मध्यम (म) और पंचम (प) पर न्यास करते हैं। वर्तमान समय में अंश स्वर को वादी स्वर भी कहा जाता है।

(3) निबद्ध और अनिबद्ध गान

(a) निबद्ध गान जो संगीत सामग्री तालबद्ध होती है उसे निबद्ध गान कहते हैं। आधुनिक युग में प्रचलित गीत जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, ठुमरी आदि तथा प्राचीन काल में प्रबन्ध, वस्तु रूपक आदि को निबद्ध गान कहा जाता है।

(b) अनिबद्ध गान जो सामग्री ताल में न बंधी हो केवल मात्र स्वरबद्ध हो उसे अनिबद्ध गान कहते हैं।